भौमोऽत्रिः।विश्वे देवाः। त्रिष्टुप्, १६ एकपदा विराट्।

आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था अमर्धन्तीरुप नो यन्तु मध्वा।

महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति॥ ५.०४३.०१

धेनवः- प्रीणयित्र्यः। आपो गावो वा। आपो मूलशक्तिधाराः। गावश्चिद्रश्मयः। पयसा- रसेन। तूर्ण्यर्थाः- क्षिप्रावगमनाः। अमर्धन्तीः- अहिंसन्त्यः। मध्वा- मधुरभावनया। नः- अस्मान्। आ यन्तु- आगच्छन्तु। महो- महत्यै। राये- सम्पदे। बृहतीः- महतीः। सप्त- सप्तसाधनभूमिकासम्बन्धिनीः। मयोभुवः- सुखकरीः। सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेत इति श्रुतेः सप्त सिन्धवः सप्तलोकमूलशक्तिधारा इति ज्ञायन्ते। विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन्निति श्रुतेश्च। विप्रः- मेधावी। जरिता- रसनिष्पादकः स्तोता वा। जोहवीति- आह्वयति॥१॥

आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे।

पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम्॥ ५.०४३.०२

सुष्टुती- शोभनस्तुत्या। नमसा- नमस्कारेण। वाजाय- सद्गतये। वज गतौ। आ वर्तयध्यै- आवर्तयितुम्। अमृध्रे- अहिंस्ये। द्यावा पृथिवी- द्यावापृथिव्यौ। स्तौमि। पिता माता- मातापितराविव स्थिते। मधुवचाः- मधुरवचने। सुहस्ता- शोभनबाहू। शोभनकर्मयुक्ते। यशसौ- कीर्तियुक्ते। भरे भरे- प्रतिनिवाहे। नः- अस्मान्। अविष्टाम्- रक्षतम्॥२॥

अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम्।

होतेव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय॥ ५.०४३.०३

अध्वर्यवः- ध्वररहितकर्मकामाः। मधूनि- रसान्। चकृवांसः- कुर्वन्तः। वायवे- वाताय प्राणाय। चारु- कल्याणम्। शुक्रम्- रसम्। प्र- प्रकर्षेण। भरत- धारयत। नः- अस्माकम्। प्रथमः- मुख्यः। होता- देवाह्वाताग्निः। इव। अस्य- एतम्। मध्वः- रसम्। देव- द्योतनशील। पाहि- अनुभव। ते- तव। मदाय- तृप्तये। ररिम- ददाम॥३॥

Dr. Rangani

दश॒ क्षिपो॑ युञ्जते बा॒हू अद्रिं॒ सोम॑स्य॒ या श॑मि॒तारा॑ सु॒हस्ता॑।

मध्वो॒ रसं॑ सु॒गभ॑स्तिर्गिरि॒ष्ठां चनि॑श्चदद्दुहे शु॒क्रम॑ंशुः॥ ५.०४३.०४

दश क्षिपः- दशाङ्गुळयः। अद्रिम्- सोमाभिषवणग्रावाणम्। युञ्जते- गृह्णन्ति। सोमस्य। या- यौ। शमितारा- अभिषोतारौ। सुहस्ता- शोभनहस्तौ भवतः। तौ बाहू। युञ्जते। शोभनाङ्गुळयो हस्तावेतत्सर्वं शोभनकर्मप्रतीकभूतम्। सुगभस्तिः- शोभनाङ्गुळिः। चनिश्चदत्- आह्लादयन्। गिरिष्ठाम्- स्थैर्यप्रतीकपर्वतनिहितम्। शुक्रम्- शुभ्रम्। मध्वो रसम्। अंशुः- व्याप्तः सन्। दुदुहे- दुदोह ॥४॥

असा॑वि ते जुजुषा॒णाय॒ सोमः॒ क्रत्वे॒ दक्षा॑य बृह॒ते मदा॑य।

हरी॒ रथे॑ सु॒धुरा॒ योगे॑ अ॒र्वागिन्द्र॑ प्रि॒या कृ॑णुहि हू॒यमा॑नः॥ ५.०४३.०५

जुजुषाणाय- सेवमानाय। ते- तुभ्यम्। क्रत्वे- प्रज्ञार्थम्। दक्षाय- वृद्ध्यर्थम्। बृहते- महते। मदाय- हर्षाय। सोमः- रसः। असावि- निष्पादितः। हूयमानः- आहूतः सन्। इन्द्र- परमेश्वर। हरी- तव प्राणाश्वौ। रथे। सुधुरा- धुरि नियुक्तौ। योगे- सुष्ठु योजितौ। प्रिया- प्रियौ। अर्वाक्- अस्मदभिमुखौ। कृणुहि- कुरु ॥५॥

आ नो॑ म॒हीम॒रम॑तिं स॒जोषा॒ ग्नां दे॒वीं नम॑सा रा॒तह॑व्याम्।

मधो॒र्मदा॑य बृह॒तीमृ॑त॒ज्ञामाग्ने॑ वह प॒थिभि॑र्देव॒यानैः॑॥ ५.०४३.०६

अग्ने- सत्क्रतो। नः- अस्मदर्थम्। सजोषाः- समानप्रीतिः सन्। महीम्- महतीम्। अरमतिम्- विरक्ताम्। ग्नाम्- शरण्याम्। स्त्रीशक्तिसम्पन्नां मातृशक्तिमयीम्। रातहव्याम्- दत्तहव्याम्। बृहतीम्। देवीम्- द्योतनशीलाम्। ऋतज्ञाम्- प्रकृतिनियतिभूतसत्यज्ञाम्। मधोः- रसस्य। नमसा- वन्दनेन। मदाय- तृप्तये। देवयानैः पथिभिः- देवमार्गैः। आ वह- प्रापय ॥६॥

अ॒ञ्जन्ति॒ यं प्र॒थय॑न्तो॒ न विप्रा॑ व॒पाव॑न्तं॒ नाग्निना॒ तप॑न्तः।

पि॒तुर्न पु॒त्र उ॒पसि॒ प्रेष्ठ॒ आ घ॒र्मो अ॒ग्निमृ॒तय॑न्नसादि॥ ५.०४३.०७

Dr. Rangani

यम्। वपावन्तम्- बीजसन्तानयुक्तम्। अग्निना- पावकेन सत्क्रतुना। तपन्तः- दीपयन्तः। न- च। प्रथयन्तः- प्रख्यापयन्तः। न- च। विप्राः- मेधाविनः। अञ्जन्ति- मण्डयन्ति। घर्मः- स तपोमयः। पितुः- जनकस्य। उपसि- उपस्थे अन्तिके। प्रेष्ठः- अतिशयेन प्रियः सन्। स्थितः। पुत्रः- सुत इव। अग्निम्- पावकं सत्क्रतुम्। ऋतयन्- सत्यप्रज्ञया जानन्। असादि- प्रपन्नः ॥७॥

अच्छा मही बृहती शंतमा गीर्दूतो न गन्त्वश्विना हुवध्यै।
मयोभुवा सरथा यातमर्वाग्गन्तं निधिं धुरमाणिर्न नाभिम्॥ ५.०४३.०८

मही- महती। बृहती। शन्तमा- शङ्करी। गीः- वाक्। दूतः। न- इव। अश्विना- अश्विनौ प्राणेशनशक्तिभूतौ। हुवध्यै- आह्वातुम्। अच्छ- अभिलक्ष्य। गन्तु- गच्छतु। मयोभुवा- आनन्दकरौ। सरथा- समानरथस्थौ। धुरम्- धारिणीम्। नाभिम्। आणिः- कीलः। न- इव। निधिम्- सम्पदं हव्यं प्रति। गन्तम्- आगच्छतम्। अर्वाक्- अस्मदभिमुखौ। आ यातम्- आगच्छतम् ॥८॥

प्र तव्यसो नम उक्तिं तुरस्याहं पूष्ण उत वायोरदिक्षि।
या राधसा चोदितारा मतीनां या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन्॥ ५.०४३.०९

तव्यसः- बलीयसः। तुरस्य- क्षिप्रगतेः। पूष्णः- पोषकस्य सूर्यस्य। उत- अपि च। वायोः- प्राणस्य। नम उक्तिम्- वन्दनम्। अहम्। अदिक्षि- प्रदिशामि। या- यौ। राधसा- संसिद्ध्या। मतीनां चोदितारौ- सद्भावनाचोदकौ। उत- अपि च। त्मन्- स्वत एव। या- यौ। वाजस्य द्रविणोदौ- सम्पद्दायकौ तौ पूषवायू स्तौमि ॥९॥

आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वाना रूपेभिर्जातवेदो हुवानः।
यज्ञं गिरो जरितुः सुष्टुतिं च विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती॥ ५.०४३.१०

जातवेद- जातविद्याग्ने। हुवानः- अस्माभिराहूतः। विश्वान्- सर्वान्। मरुतः- प्राणविशेषान्। नामभिः रूपभिः- तेषां नामरूपैः। आ वक्षि- आवह। विश्वे- सर्वे। मरुतः। ऊती- रक्षाशक्त्या।

Dr. Rangaji

जरितुः- स्तोतुः। सुष्टुतिम्- शोभनस्तुतिम्। गिरः- मन्त्रान् प्रति। यज्ञम्। च। गन्त- आगच्छत ॥१० ॥

आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम्।
हवं देवी जुजुषाणा घृताची शग्मां नो वाचमुशती शृणोतु॥ ५.०४३.११

बृहतः- महतः। दिवः- चिदाकाशात्। पर्वतात्- गिरेः स्थैर्यप्रतीकात्। यजता- पूज्या। सरस्वती- रसचोदयित्री। नः- अस्माकम्। यज्ञम्। आ गन्त- आगच्छतु। हवम्- आह्वानम्। जुजुषाणा- सेवमाना। देवी- लीलावती। घृताची- ज्योतिष्मती। नः- अस्माकम्। शग्माम्- सुखकरीम्। वाचम्। उशती- कामयन्ती। शृणोतु ॥११ ॥

आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं सदने सादयध्वम्।
सादद्योनिं दम आ दीदिवांसं हिरण्यवर्णमरुषं सपेम॥ ५.०४३.१२

वेधसम्- मेधाविनम्। नीलपृष्ठम्- स्निग्धम्। बृहन्तम्- महान्तम्। बृहस्पतिम्- मन्त्रमेधाधिदैवतम्। सदने- यजनदेशे। सादयध्वम्- स्थापयत। सादद्योनिम्- सदनस्थम्। दमे- सदने। आ दीदिवांसम्- आदीप्तम्। हिरण्यवर्णम्। अरुषम्- रोचमानम्। सपेम- स्पृशामः ॥१२ ॥

आ धर्णसिर्बृहद्दिवो रराणो विश्वेभिर्गन्त्वोमभिर्हुवानः।
ग्ना वसान ओषधीरमृध्रस्त्रिधातुशृङ्गो वृषभो वयोधाः॥ ५.०४३.१३

धर्णसिः- धारकः। बृहद्दिवः- चिदाकाशात्। रराणः- रममाणः। हुवानः- आहूतः। विश्वेभिः- सर्वाभिः। ओमभिः- रक्षाशक्तिभिः। आ गन्तु- आगच्छतु। ग्नाः- शरण्याः। ओषधीः। वसानः- बिभ्रत्। अमृध्रः- अहिंस्यः। त्रिधातृशृङ्गः- भूर्भुवरादिभूमिकात्रयशृङ्गः। वृषभः- वर्षकः। वयोधाः- हव्यधारकोऽग्निर्भवति ॥१३ ॥

मातुष्पदे परमे शुक्र आयोर्विपन्यवो रास्परासो अग्मन्।
सुशेव्यं नमसा रातहव्याः शिशुं मृजन्त्यायवो न वासे॥ ५.०४३.१४

Dr. Rangani

परमे- श्रेष्ठे। शुक्रे- शुभ्रे। मातुष्पदे- अदित्या अन्तिके। आयोः- मनुष्यस्य। विपन्यवः- ऋत्विजः। रास्पिरासः- दानयोग्यधनस्पर्शिनः। अग्मन्- आगच्छन्। सुशेव्यम्- सुसुखम्। नमसा- नमस्कारेण। रातहव्याः- दत्तहविष्काः। आयवः- मनुष्याः। वासे- वस्त्राच्छादनाय। शिशुम्। न- इव। मृजन्ति- शोधयन्ति ॥१४ ॥

बृहद्वयौ बृहते तुभ्यमग्ने धियाजुरौ मिथुनासः सचन्त।
देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्॥ ५.०४३.१५
उरौ देवा अनिबाधे स्याम॥ ५.०४३.१६
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि॥ ५.०४३.१७

अग्ने। बृहते- महते। तुभ्यम्। धियाजुरः- धिया रसनिष्पादकाः। मिथुनासः- दम्पतीभूताः। बृहत्- महत्। वयः- हव्यम्। सचन्त- सेवन्ते। इतःपरं पूर्वं व्याख्यातम् (५.४२.१६,१७,१८) ॥१५॥

Dr. Rangaji